O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ Volume II Issue I

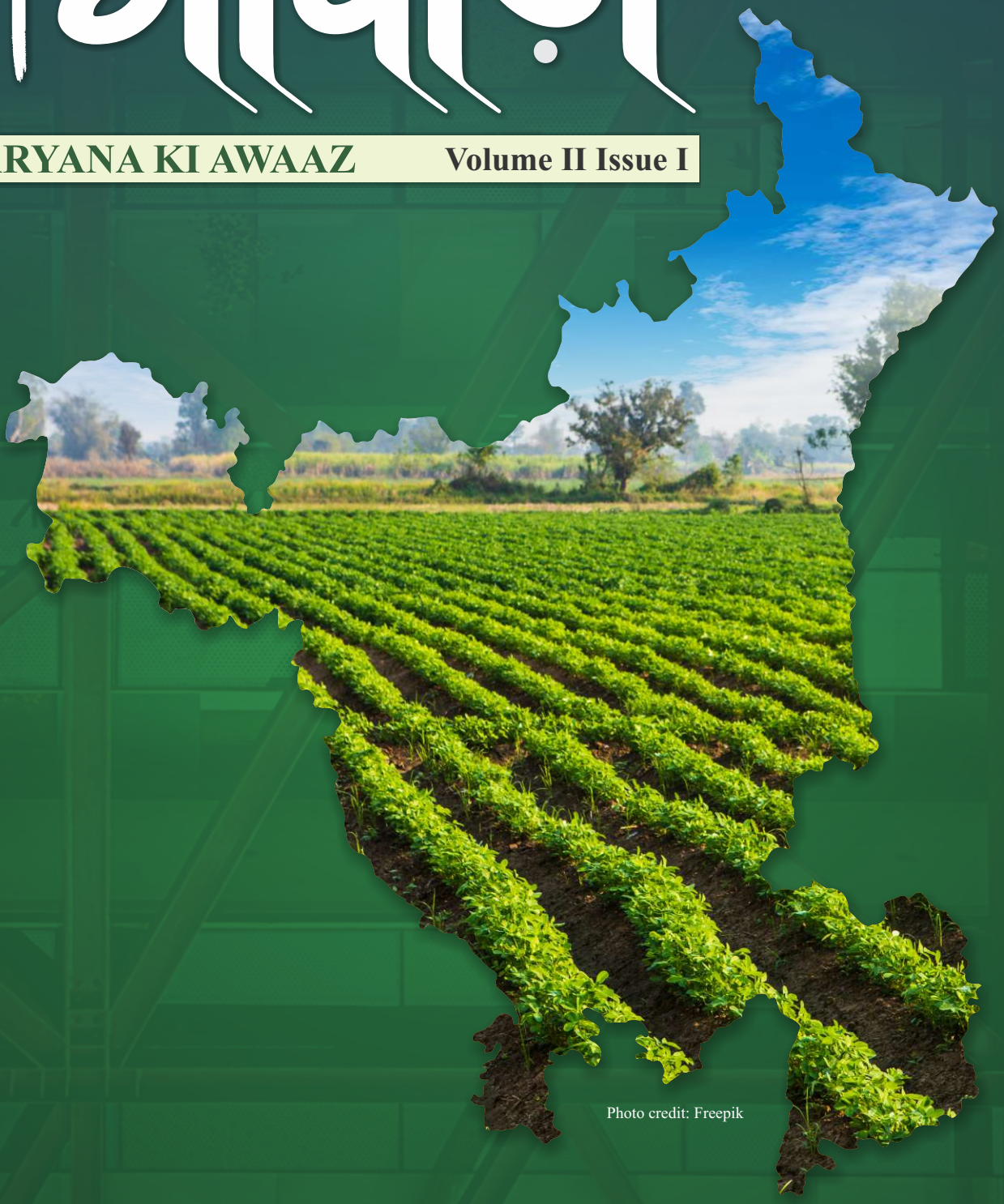

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए प्राची हुड्डा को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए **वीना हुड्डा** के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम **श्रीमति बिन्नी अंतिल, श्रीमति सुमित्रा फोगाट** और **श्रीमति शीला फोगाट** को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।

हरियाणा के नाम

प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं ।

“प्रगतिशील” विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः “तुम हरियाणवी नहीं लगते” या “तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते” जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक “हरियाणा की आवाज़” इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम II

स्पोर्ट्स स्टोरीज़ ऑफ़ हरियाणा

अंक 1
गेम चेंजरस:
70 के दशक में खेलने वाली महिलाएँ

वर्तमान में हरियाणा को खेलों का केंद्र माना जाता है। लेकिन इससे पहले ऐसा दौर था जब महिलाओं की खेल में उपस्थिति बहुत कम थी। पर उस दौर में भी कुछ ऐसी महिलाएं थीं जिन्होंने खेल में न सिर्फ रूचि दिखाई अपितु सफलता भी प्राप्त की। हरियाणा की आवाज़ के इस अंक में हम तीन ऐसी अद्भुत महिलाओं की कहानियाँ लेकर आए हैं, जिन्होंने 1970 के दशक में खेल के मैदान में कदम रखा - ऐसे समय में जब महिलाओं के पास सीमित अवसर थे।

सीमित अवसर होते हुए भी उन्होंने कभी साहस नहीं छोड़ा। उन्होंने नियमित रूप से अभ्यास किया, कड़ी मेहनत की, और दृढ निश्चय के साथ अनुशासन का पालन किया। उस समय की सामाजिक परंपराओं के बावजूद, उनका खेल के प्रति समर्पण उनकी निजी यात्रा तो थी ही पर साथ में अन्य महिलाओं के लिए भी मार्गदर्शन था।

उनकी दशकों पुरानी दोस्ती, अनुभव और खेल के प्रति उत्साह ने उस परंपरा की नींव रखी जिसे आज हम गर्व से देखते हैं - राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करतीं हरियाणा की महिलाएं।

इस अंक में हम उनकी कहानियों को याद करते हुए उनके हौसले को सलाम करते हैं।

श्रीमति बिन्नी अन्तिल

श्रीमति बिन्नी अन्तिल ने अपने खेल जीवन की शुरुआत 1970 के दशक में की, जब वे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (HAU) में स्पोर्ट्स और ह्यूमैनिटीज़ में स्नातक की पढ़ाई कर रही थीं। वे मूल रूप से हरियाणा और दिल्ली की सीमा पर बसे गाँव गढ़ी से हैं, लेकिन उनके पिता सेना में थे, जिस कारण उनका बचपन विभिन्न शहरों में बीता। इस वजह से उन्हें बहुत अनुभव और व्यापक दृष्टिकोण मिला।

वे बड़े सम्मान से विश्वविद्यालय के पहले कुलपति, ए. एल. फ्लेचर को याद करती हैं, जिन्होंने विश्वविद्यालय में खेलों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने स्वयं छात्रों, विशेषकर छात्राओं को कम से कम एक खेल अपनाने के लिए प्रेरित किया। अपने कसिन्स के साथ, श्रीमति अन्तिल ने धीरे-धीरे बास्केटबॉल में रुचि ली और उसे गंभीरता से अपनाया।

1975 से 1978 के बीच, उन्होंने चार राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं, दो अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं और एक राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता (जो बेंगलुरु में हुई) में भाग लिया था।

उस समय जब महिलाओं के लिए पारंपरिक पोशाक ही होती थी, श्रीमति अन्तिल और उनकी साथी छात्राएं आत्मविश्वास से खेलों के अनुरूप कपड़े पहन कर खेलती थीं। सर फ्लेचर की रुचि और प्रोत्साहन के चलते विश्वविद्यालय ने महिला खिलाड़ियों के लिए बेहतर सुविधाएं जैसे ड्रेसिंग रूम आदि सुनिश्चित की थीं। विश्वविद्यालय का वातावरण ऐसा था जहाँ महिलाओं के खेल और उनके परिधानों को सामान्य रूप से स्वीकार किया जाता था। उस दौर में भी लड़के और लड़कियाँ एक साथ अभ्यास करते थे, प्रतियोगिताओं में भाग लेते थे और साथ यात्रा भी करते थे - जबकि क्षेत्रीय स्तर पर अब भी लैंगिक भेदभाव कायम था।

जब उनसे पूछा गया कि क्या खेलों के दौरान उन्हें कभी पारिवारिक या सामाजिक दबाव का सामना करना पड़ा, तो उन्होंने बताया कि उनके परिवार का माहौल पहले से ही प्रगतिशील था। उनके पिता सेना में थे और उनका जन्म बॉम्बे (अब मुंबई) में हुआ था, और उनका परिवार पहले से ही ब्रॉडमाइंडेड था। उनके परिवार के अन्य सदस्य भी शिक्षित और सरकारी नौकरियों में थे। यहाँ तक कि परिवार की महिलाएं भी पढ़ी-लिखी थीं और बाहर काम करती थीं। इसलिए उनके खेलों में आने को परिवार से समर्थन मिला।

वह आर्य समाज की भूमिका को भी महत्वपूर्ण मानती हैं, जिसके सिद्धांतों का पालन उनका परिवार करता था। आर्य समाज ने हरियाणा में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक रूप से काफी बढ़ावा दिया।

1979 में शादी के बाद वे खेलों से दूर हो गईं। लेकिन वर्षों बाद उनके कॉलेज की साथी खिलाड़ियों ने उन्हें वरिष्ठ नागरिक खेल प्रतियोगिताओं से जोड़ा, जिसमें वे पिछले 12 वर्षों से नियमित रूप से भाग ले रही हैं। चूंकि इन प्रतियोगिताओं में बास्केटबॉल शामिल नहीं है, इसलिए अब उन्होंने एथलेटिक्स को अपनाया है। इन खेलों के ज़रिए वे देश के लगभग हर बड़े शहर की यात्रा कर चुकी हैं - कोलकाता से लेकर चेन्नई तक।

उनकी हाल की खेल यात्राओं के बारे में और जानकारी हमारी अगली संवाददाता श्रीमति सुमित्रा फोगाट द्वारा साझा की गई है।

श्रीमति सुमित्रा फोगाट

श्रीमति सुमित्रा फोगाट, जो श्रीमति बिन्नी अन्तिल की घनिष्ठ मित्र रही हैं, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (HAU) में उनके साथ पढ़ती थीं (बी.एससी. होम साइंस) और उन्होंने साथ में बास्केटबॉल भी खेला। वे दादरी जिले के ग्रामीण और कृषिप्रधान गाँव चन्देनी से हैं। खास बात यह रही कि जब उन्होंने विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और खेलना शुरू किया, तब वे शादीशुदा थीं और उनके पति सेना में कार्यरत थे। इसके बावजूद उन्हें कभी भी परिवार की ओर से किसी प्रकार की रोक-टोक या पाबंदी का सामना नहीं करना पड़ा।

दसवीं कक्षा तक की पढ़ाई उन्होंने अपने गाँव के स्कूल से की और फिर उच्च शिक्षा के लिए HAU आईं। विश्वविद्यालय में यह नियम था कि हर छात्र को सप्ताह में कम से कम एक खेल खेलना अनिवार्य था। उन्होंने बास्केटबॉल को चुना, और उनकी लम्बी कद काठी के कारण विश्वविद्यालय के कोच ने भी उन्हें इस खेल के लिए उपयुक्त माना।

उनकी खेल उपलब्धियों में 1975 में रोहतक में राज्य स्तरीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता, 1976 में लुधियाना में अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता और अगले वर्ष राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेना शामिल है। वे याद करती हैं कि उनके परिवार, विशेष रूप से उनके पिता, को उनके राष्ट्रीय स्तर पर खेलने पर अत्यंत गर्व हुआ था।

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने सार्वजनिक सेवा में होम साइंस की व्याख्याता (लेक्चरर) के रूप में चर्खी दादरी जिले में नौकरी शुरू की (जो उस समय भिवानी जिले का हिस्सा था)। नौकरी के बाद भी वह खेलों से जुडी रही - वे कॉलेज स्तर की वार्षिक प्रतियोगिताओं में बैडमिंटन और शॉटपुट में भाग लेती रहीं। इसके अलावा, वे खेलों में रुचि रखने वाले छात्रों को प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करती थीं।

पिछले लगभग दो दशकों तक (दो साल की एक छोटी सी व्यक्तिगत बाधा को छोड़कर), श्रीमति फोगाट ओपन मास्टर्स एथलेटिक टूर्नामेंट में सक्रिय रूप से भाग लेती रहीं। यह

सिलसिला 2022 में कोलकाता में समाप्त हुआ, जब उन्होंने और उनकी मित्रों ने बढ़ती उम्र के कारण इन खेलों से विराम लेने का फैसला किया।

दिलचस्प बात यह है कि इन सीनियर गेम्स में उनका प्रवेश संयोगवश हुआ। विश्वविद्यालय के एक बैचमेट (जो बाद में हरियाणा इकाई के अध्यक्ष बने) ने उन्हें इन वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित विशेष खेल प्रतियोगिताओं के बारे में बताया। यहीं से उन्होंने खेलों में भाग लेना शुरू किया और जानकारी अपने दोस्तों और सहकर्मियों को भी दी।

इन प्रतियोगिताओं में वे मुख्य रूप से जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो और शॉटपुट में भाग लेती थीं। लेकिन उनके लिए ये टूर्नामेंट सिर्फ खेल में सक्रिय रहने का ज़रिया नहीं थे, बल्कि ये एक सालाना अवसर बन गए थे जहाँ पुराने दोस्तों से मिलना, नए शहरों की यात्रा करना, और रोज़मर्रा की जिंदगी से दूर अपने आप से फिर से जुड़ने का मौका मिलता था।

2005 से 2022 के बीच श्रीमति फोगाट ने बेंगलुरु, चेन्नई, पुडुचेरी, गुवाहाटी और जयपुर जैसे भारत के कई प्रमुख शहरों की यात्रा की। उन्होंने एक अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में थाईलैंड तक का सफर भी किया। यह सब सिर्फ खेलों के कारण संभव हो सका।

श्रीमति सुशीला फोगाट

श्रीमति सुशीला फोगाट मूल रूप से रोहतक की रहने वाली हैं। शादी के बाद वे दादरी आ गईं और वहाँ उन्होंने हिंदी व्याख्याता (लेक्चरर) के रूप में कार्य किया। उन्होंने रोहतक के जाट कॉलेज से पढ़ाई की, जहाँ उनके पिता प्राचार्य थे और भाई अंग्रेज़ी विभाग में कार्यरत थे। कॉलेज के वार्षिक एथलेटिक मीट में वे बड़े उत्साह के साथ भाग लेती थीं।

साल 2004 में उनकी नियुक्ति राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, चर्खी में हुई। यहीं से उनके खेल जीवन की असली शुरुआत हुई। स्कूल के डीपी ने उन्हें और अन्य महिला शिक्षकों को फिटनेस पर ध्यान देने और खेलों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। शुरू में वे केवल शौक के लिए खेलने लगी, लेकिन धीरे-धीरे उनकी रुचि बढ़ती गई। फिर उन्होंने अपने साथियों के साथ ओपन एथलेटिक्स टूर्नामेंट्स में भाग लेना शुरू किया, जहाँ वे मुख्य रूप से हैमर थ्रो और डिस्कस थ्रो में हिस्सा लेती थीं। स्कूल की प्रधानाचार्या और अन्य शिक्षक भी खेलों में सक्रिय थे, जिससे एक प्रेरणादायक माहौल बना।

श्रीमति फोगाट और उनकी सहकर्मियों के लिए काम कभी बोझ नहीं था। क्लासेज के बाद या खाली समय में वे सभी स्कूल के मैदान में इकट्ठा होकर अभ्यास करती थीं। बाद में वे सभी मिलकर प्रतियोगिताओं में भी भाग लेती थीं। ये सभी प्रयास इस सोच के साथ किए जाते थे कि राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन हो सके।

उनकी मेहनत रंग लाई जब 2009-10 में थाईलैंड में आयोजित टूर्नामेंट में उन्होंने हैमर थ्रो और डिस्कस थ्रो में दो स्वर्ण पदक और शॉटपुट में एक रजत पदक जीता।

वह प्रशिक्षण और प्रतियोगिताओं के दौरान महसूस की गई बाल सुलभ ऊर्जा और खुशी को आज भी बड़े प्यार से याद करती हैं। जब उनसे पूछा गया कि क्या 2004 में इतने लंबे समय बाद खेल में लौटना मुश्किल रहा, तो वे हँसते हुए बोलीं कि उनमे हरियाणवी ऊर्जा तो हमेशा से थी। घर के काम-काज करती रही थीं, इसलिए खेलों में लगने वाली मेहनत उन्हें कभी ज़्यादा नहीं लगी।

करीब दो दशकों के इस सफर को वे मुस्कुराते हुए याद करती हैं: "बहुत ही खेले, और बहुत ही इंजॉय किया।"

उन्होंने यह भी बताया कि खेलों में भागीदारी की वजह से वेतन में बढ़ोतरी भी हुई। उम्र बढ़ने के साथ शरीर की चुनौतियों पर मज़ाक करते हुए वे कहती हैं: "वार्मअप तो ज़रूरी है खेलने से पहले, पर उम्र के साथ जब तक वार्मअप खत्म होता है, खेलने की ताकत ही नहीं बचती!"

JGU at a GLANCE

16000+ Students — FEMALE 51% — MALE 49% — UNDERGRADUATE 80% — MASTERS/DOCTORAL 20%

1100+ Faculty — FEMALE 55% — MALE 45%

35 Average age of Faculty Members

45% Faculty Members are Alumni of the top **200** Global Universities

4000+ Faculty & Administrative Staff from **50** countries

12000+ Alumni Network World-Wide

28 Indian States & Union Territories represented by Students

12 SCHOOLS

50+ Programmes

30+ Undergraduate Programmes
20+ Postgraduate Programmes
Doctoral Programme

- Jindal Global Law School — India's First Global Law School
- Jindal Global Business School — India's First Multi-Disciplinary Global Business School
- Jindal School of International Affairs — India's First Global Policy School
- Jindal School of Government and Public Policy — India's First Public Policy School
- Jindal School of Liberal Arts & Humanities — India's First Transnational Humanities School
- Jindal School of Journalism & Communication — India's First Global Media School
- Jindal School of Art & Architecture
- Jindal School of Banking & Finance — India's First Global Finance School
- Jindal School of Environment & Sustainability
- Jindal School of Psychology & Counselling — India's First Transdisciplinary Psychology School
- Jindal School of Languages & Literature
- Jindal School of Public Health & Human Development

RESEARCH

8500+ Publications

60+ Interdisciplinary research centres

6 Research & capacity building institutes

- JILDEE — Jindal Institute of Leadership Development and Executive Education
- Jindal Institute of Behavioural Sciences
- IIHEd — International Institute for Higher Education Research & Capacity Building — O.P. Jindal Global University
- Jindal India Institute — Propelling the Indian Century — O.P. Jindal Global University
- Jindal Institute of Haryana Studies
- MJAS — Motwani Jadeja Institute for American Studies — O.P. Jindal Global University

INTERNATIONAL COLLABORATIONS

525+ Collaborations with International Universities & Higher Education Institutions

10 Forms of Global Partnerships

80+ Countries & Regions

200+ Faculty & Student Exchange Collaborations

75+ Countries represented by Students

RANKINGS & RECOGNITIONS

RANKED NO.1 IN INDIA — LAW & LEGAL STUDIES

RANKED NO.1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — ARTS & HUMANITIES

RANKED NO.1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — POLITICS & INTERNATIONAL STUDIES

QS WORLD UNIVERSITY RANKINGS BY SUBJECT 2025

RANKED NO.1 IN THE WORLD — TIMES HIGHER EDUCATION ONLINE LEARNING RANKINGS 2024

RANKED AMONG TOP 101-200 SDG 12 & 16 GLOBALLY — TIMES HIGHER EDUCATION IMPACT RANKINGS 2024

THE Times Higher Education

CONFERRED THE STATUS OF AN INSTITUTION OF EMINENCE BY THE MINISTRY OF EDUCATION GOVERNMENT OF INDIA

O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

www.jgu.edu.in

Sonipat-131001, (NCR of Delhi)

JGU - An Initiative of Jindal Steel & Power Foundation